कृष्णा सोबती का ऑचलिक उपन्यास –'जिंदगीनामा' में संस्कृति दर्शन

डॉ.हेमलता श्याम पाटील (माने) हिंदी विभाग श्रीमती ए.आर.पाटील कन्या .महाविद्यालय,इचलकरंजी., जि.कोल्हापूर

.हमारा देश कृषिप्रधान है। भारत में प्राचीत काल से खेती यह प्रमुख व्यवसाय रहा है। खेती करनेवाले लोग देहात में रहते है। वे लोग अनपड होते है। आर्थिक दृष्टि से कार्यक्षम नहीं होते । खेती पर देश की अर्थव्यवस्था निर्भर होती है। इसीपर लोगों का जीवन अवलंबित होता है। यहॉ रहनेवाले लोक अज्ञानी, भोले–भाले और रुढि परंपरा को मानते है। इन लोगों में धर्मांधता और अंधविश्वास अधिक होता है। इनमें उॅच–नीच, जात–पॉत की भावना अधिक रहती है। ग्रामों में जमीदार, सेठ साहूकार, पूॅजीपति, मांत्रिक–तांत्रिक, साधू–महाराज आदि लोग सदियों से अत्याचार, अन्याय करते आ रहे है। ग्रामीण यह शब्द ग्राम से बना है । छोटे–से भूभाग में इक्कठा होकर कुछ लोग रहते है। ऐसे भूभाग को ग्राम कहा जाता है। भारत देश ऐसेही ग्रामों से बना हुआ है। भारत की अस्सी प्रतिशत जनता ग्रामों में बसी हुई है। अपनी जीविका वे खेती से चलाते है। इसके साथ पशु–पालन जैसे छोटे–छोटे व्यवसाय भी करते है।

प्राचीन काल से ग्राम भारतीय समाज व्यवस्था का एक आधारभूत एवं महत्वपूर्ण अंश रहा है। ग्राम शब्द का अर्थ – हिंदी शब्द सागर में दिया है। इसका अर्थ है – छोटी बस्ती, गॉव, मनुष्य के रहने का स्थान । भारत के प्रत्येक संस्कृति क्षेत्र में आकार और जनसंख्या के अनुसारअपने प्रदेश के गॉवों का वर्गीकरण करने के लिए अपनी एक अलग नामावली हो गयी है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के हिंदी प्रदेशों में गॉव और कस्बो में सामान्यतः भेद किया जाता है। दक्षिण में गम्पु, माजरा तथा ग्राम आदि भेद किए गये है। गम्पु में थोडी झोपडियॉ होती है। माजरा में उससे कुछ बडा गॉव होता है और ग्राम में ही मुख्य बस्ती' होती है। तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी के मराठी विश्वकोश के अनुसार – ''अपने खेतों के रहकर स्वतंत्र या सामूहिक रुप से खेती करनेवाले खेतिहरों की स्थायी बस्ती को ग्राम कहा जाता है।'' ;तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी– मराठी विश्वकोश, भाग–5, पृ.353द्ध संस्कृत और प्राकृत में 'ग्राम' शब्द का प्रयोग जातियों के विश्रामस्य के लिए हुआ है। ;डॉ.ज्ञान अस्थाना – हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याऍ पृ.33द्ध

❖ **'जिंदगीनामा' उपन्यास में ग्रामीण जीवन**–इस उपन्यास में पंजाब के अंचल की कथा है। भारत और पाकिस्तान के राजनीतिक मानचित्रों की सरहद से मुक्त पॉच नदियों के आव से झिलमिलाते पंजाब के अंचल की कथा है। गुजरात जिले के खारियॉ तहसील के घोडिया गॉव की यह कथा है। जहॉ स्वयं लेखिका रहा करती थी । 'जिंदगीनामा' की ऑचलिक संस्कृति में काश्तकारों की मेहनत और फौजी जवानों की जवॉमर्दी एक–दूसरे में घुली गयी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोकतांत्रिक शासन आ गया । उसमें विशेषतः ग्राम और ग्रामीण लोगों के हित कल्याण और रक्षा संबंधी तत्व निहित है। उसमे अनुसार ग्राम विकास को महत्व दिया है। सरकारने नये प्रकल्प–योजनाऍ बनाकर कार्यवाही शुरु की है। लेकिन इसकी कार्यवाही ठीक ढंग से नहीं हो पायी । ग्रामों तक कई योजनाऍ पहुॅची नही । इसकी कारण ग्रामों का विकास पिच्छे पड गया । 'जिंदगीनामा' उपन्यास के ग्रामवासी लोग अंग्रेजी राज को अच्छा मानते है। वे कहते है । ''सच पूछो तो अंग्रेज के राज की सौ बरकते । लोगों को सुख का सॉस तो आया । गर्क जाने आए दिन के हो हल्ले और खून खराबे तो खत्म हुए।'' ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.220द्ध इस तरह ग्रामों के विकास नहीं हो पाये।

हमारे कृषि प्रधान देशों मे ग्रामों को महत्व दिया है। गरीबी, अज्ञान, अंधविश्वास के कारण परंपरागत ढंग से खेती की जाती है। इसी कारण उससे अच्छी फसल नहीं मिलती । किसान अंधविश्वासू होने के कारण वह फसली की ओर उतना ध्यान नहीं देता था।

❖ **कृषक का अंधविश्वास**–हमारा कृषक अंधविश्वास की ओर झुकता नजर आ रहा है। प्रकृति पर खेती अवलंबित रहती है। आज प्रकृति भी अनिश्चित हो गई है। ग्रामों में लोग खेती के साथ दुग्ध–व्यवसाय या पशुपालन करते है। उससे भी ग्राम का विकास नही हो गया । जिंदगीनामा में लोग खेती अल्लाह की देन मानते है। वे कहते है ''याद रखो, जमीन अल्लाह की है। अल्लाह जिसे चाहता है उसे उसको वारिस बनाता है। ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.200द्ध अनिश्चित प्रकृति के कारण वह खेती मे प्रगति नहीं कर सके । वे गरीब थे । जैसे – ''पूछो सिर की पगडी और हल पंजाबी छोड के जट्ट किसान के पास और ज्यादा रखा ही क्या है। ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ. 181द्ध

❖ **प्राकृतिक बदलाव**–प्राकृतिक बदलाव के कारण खेती से अच्छी उपज नहीं हो रही है। कभी अकाल पडता है, तो कभी बाढ आ जाती है। इसीसे खेती पर बुरा असर हो जाता है। इससे ग्रामों की हालत बिगड जाती है। इस स्थिती का चित्रण जिंदगीनामा उपन्यास में चित्रित किया गया है। जैसे ''बादशाहों पानी इतना ही बरसे कि ज्वार अपने ठीक–ठाक रहे । पार के साल इतना पडा कि खेत की भाकरबी लग गई थी ।'' ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.276द्धखेती को जितना पानी चाहिए उतना बरसना चाहिए । लेकिन हर साल ऐसी स्थिति नहीं होती । इससे गॉव की स्थिति बिगड जाती है। लोगों को जीवन जीना मुश्किल हो जाता है। गॉव के शेठ, साहुकारों से उन्हें कर्ज लेना पडता है। किसान का कर्ज बोझा कम नहीं होता तो उसकी जमीन हडप करते है। वे अपनी जमीन साहूकार को लिखकर देते है। कर्ज का सूद बढ जाता है। इसी कारण जमीन साहूकार हडप करता है। गरीब किसान साहूकार शाहजी से बार–बार कर्ज लेते है। किसान साहूकार को व्यासपारी मानते है। पर इसका असर साहूकार पर बिल्कुल नहीं होता ।

❖ **शहर की ओर आकर्षित**–स्वतंत्रता के बाद शहरों में बदलाव आ जाता है। वहॉ औद्योगीकरण हो जाता है। इसका परिणाम गॉवो में होनेवाले छोटे–छोटे कुटी उद्योग बंद हो जाते है। ग्राम के लोग शहर की ओर आकर्षित हो जाते है। ग्राम के जवान नगर की चकाचौंध की ओर आकर्षित होकर नगर जाने लगते है। ग्राम उजडने लगता है। इस उपन्यास बीबी का पुत्र भी नगर जाता है। वहॉ बहुत पैसा कमाता है। जैसे ''बच्ची, अनोखा का पुतर काबुल जा सुच्ची दरियाई वालों के पास जा लगा । रुपयों की मूठ मिलने लगी''। ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.219द्ध शहर में ग्राम से अधिक पैसा मिलता है। यहीं आकर्षित ग्राम के युवा के सामने आज जाती है। ग्राम का नाई

रमजान गॉव छोडकर लाहोर शहर चला जाता है। इसके कहने पर मेहरअली और खुशिया भी लाहोर स्टेशन पर कुली का काम करने चले जाते है। मेहरअली के पिता इस बात से दुःखी है। वे कहते है । देखों, दोनों तगडे जवान घर–खेत ही छोडने से तो फौज की भरती बुरी थी ।'' ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.303द्ध गॉव के जवान लोग नगरोन्मुख हो गए हैं, इससे बूढे माता–पिता की आर्थिक स्थिति बुरी बनती जा रही है।

❖ **जमीदारों के शोषण**–'जिंदगीनामा' उपन्यास के शाहजी गॉव में जमींदार है। गॉव के लोग किसी चीज या पैसों की जरुरत हो तो शाहजी के पास आते है। शहाजी के पास गॉव के काफी लोगों की जमीन है। वह जमीन गॉववाले करते है, फसल निकलने के बाद शाहजी उन्हें बदले के रुप में कुछ देते है। लेकिन फरमान ली के बेटे महेरअली को यह बात अच्छी नही लगती वह अपनी खेती हो तो मैं करता हूँ । वह शाहजी से दुखी है। फरमान अली उन्हें समणाते है लेकिन वह मानता और एक दिन लाहोर स्टेशन पर कुली का काम करने भाग जाता है। गरीबीके कारण फरमान अली कर्ज के बदले जमींदार के यहॉ खेत की मालकी देते है। यह जमींदारों से होनेवाला शोषण है। ''कत्ल–डाका, उधार बंदी, असल–ब्याज और सूदखोरी में जिवियॉ हडप । कर्ज लिया, भू गहने रखी । न टोबू न कागज । हुई लिखत शाह के हाथ की तो जो जट्ट कहे सो झूठ, जो शह कहे सो सत्य'' ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.91द्ध

❖ **पाखंडी, धूर्त, चालाक लोगों के शोषण**–इस उपन्यास में गॉव वालों का शोषण करने वाले ब्राम्हण लोग है। वे ग्रामीण लोगों को धर्म के नाम पर लूटते है। शाहनी को पुत्र होता है। पुत्र को सगुन देने के लिए गॉव का ब्राम्हण भगवान पांदे आते है। संस्कृत में बोलता है मंत्र हो जाते है। जो सामान्य लोगोंकी समझ मे नाही आता । संस्कृत के बाद बडी सधी आवाज मे कहा – ''दूध–भरा चॉदी का कटोरा देने की रीति चली आई है शाहों के घर, तत्ता–तत्ता दूध भर लाओ कटोरे में । ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.159द्धविशेषता गॉव में गुसाईजी जैसे पाखंडी लोग नारी को फॅसाते है। उन्हे आख्यान सुनाते है, संस्कृत श्लोक का पढन करते है। बादाम–पिस्तेवाले दूध की मॉग करते है। शाहनी गुसाईजी के लिए इस दूध को लेकर आती है। गुसाईजी ने गुस्से के छोर से कटोरा पकडा और प्रेम से घूँट पीने लगते है। पाखंडी लोक गॉव वालों को लूटते है। दयचानंदी ने पितरों के नाम पर श्राध्द का विरोध किया । उससे भी ब्राम्हण लोग गरीबोंका शोषण करते है।, यह तो अंधविश्वास है । धूर्त तारेशाह ने महीपत जैसे आदमी की लडकी भगाकर उसकी इज्जत लूटता है। ग्रामों के धूर्त चालाक लोग हमेशा गरीब, अज्ञानी लोगों का शोषण करते है।

❖ **जडी–बूटी की दवा और भ्रष्टाचार** –ग्राम के आदमी अस्पताल जाने के लिए डरते है। वे गॉव के काशीराम से दवा लेते है। फकीर को जहरीले कीडे–मकोडों ने काट लिया था तो शाह काशीराम को जडी–बूटी की दवा देता है। लेकिन वह अस्पताल जाने के लिए इन्कार करता है। उन्हें डर है कि डॉक्टर टॉग काट देगा । गॉव में सालभर महामारी आ जाती है। लोगों को बचाने के लिए सरकाने विलायत से डॉक्टरों को बुलाया । इन डॉक्टरों से गॉववालों पर अन्याय हो जाता है। वे लोगों के साथ इन्सान जैसा व्यवहार नही करते । फतेह अल्लाजी के शब्दोंमें ''डागदर अपने बुला लेती है सरकार विलायत से । इनकी तरफ से कोई मरे, कोई जिए । ये गोरे अपने बताश्भाषा पीये । देशी लोगों को इन्सान नहीं समझते । ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.270द्ध

❖ **भूत–प्रेत का भय** –ग्रामीन लोक भूत–प्रेत पर चुडैल पर विश्वास रखते है। यही बात उनके लिए समस्या बन जाती है। मरी हुई सौतन की परछाई दिखने से बडी शाहनी डरती है, उसे हाथ जोडकर कहती है ''पुरखिन पुत्रजीने मरने से परे शाहोंके घर की मालकिन । मै तो चेरी तुम्हारे हुक्म से । ;कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ.38द्ध पति के सपने में पहले पत्नी गौरजा आ जाती है । वे समझते है कि गौरजा की अवकृपा हो गयी होगी इसी कारण शाहनी मॉ नहीं बन पाती । ऐसा अंधश्विास भूत–प्रेत कें बारे में लोगों के मन में आ जाते है।

❖ **निष्कर्ष** –

कृष्णा सोबती ने जिंदगीनामा उपन्यास में अंचल की अनेक समस्याओं का तथा ॲचल के नैतिक अनैतिक संबंधों का यथार्थ अंकन हुआ है। ग्रामीन लोग अज्ञानी है। इसी कारण अंधश्रध्दाळू और अंधविश्वासी बन गए है। उसे भगाने के लिए जंतर–मंतर, मंत्र–तंत्र, जादू–टोना झाड–फूंक करनेवाले साधू महाराज, बूबा–बाबा पर विश्वास रखते थे लोग उन्हे लूटते है । इनका अज्ञान देखकर उन्हेंलूटाने का प्रयास करते है ।ये लोग अपनी मानसिकता में बदलाव नही करते जबतक वे बदलाव नही करेंगे इनमें सुधार नहीं हो जाएगा । धीरे–धीरे इनमे बदलाव होना महत्वपूर्ण है। तो ऑचल में सुधार हो जाएगा । हमारा भारत सुजलाम्–सुफलाम हो जायेगा । ये दृश्य अवश्य सफल हो जायेगा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा – राजकलम प्रकाशन संस्करण प्र. 1972
2. रोहिणी, एक नजर कृष्णा सोाबतीपर – आखिल भारतीयच उणद, चर्खे बालन, नयी दिल्ली प्र. संस्करण 2000
3. तांबे सुरेखा – कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन, पूजा पब्लिकेशन – कानपूर प्र. संस्करण 2011